दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट
(इतिहास विभाग, 17-18 मार्च, 2023)

****

शहीद दलवीर सिंह राजकीय महाविद्यालय खरखौदा में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। यह सेमिनार इतिहास विभाग द्वारा आयोजित किया गया। सेमिनार में 182 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की। सेमिनार में पहले दिन मुख्य अतिथि के रूप में ज्योति मित्तल, उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) खरखौदा (सोनीपत) ने शिरकत की। अपने वक्तव्य में मुख्य अतिथि ने खरखौदा के इतिहास पर सेमिनार आयोजित करने के लिए महाविद्यालय को बधाई दी और कहा कि इस सेमिनार के आयोजन से खरखौदा इतिहास और समृद्ध होगा और प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत शोध पत्रों से नई-नई सूचनाओं का पता लग सकेगा।

इस सेमिनार के पहले दिन सम्मानित अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त प्राध्यापिका (हिन्दी) डॉ. राजकला देशवाल और राजकीय महाविद्यालय जुलाना (जींद) के प्राचार्य डॉ. यशपाल सिंह ने शिरकत की।

डॉ. राजकला देशवाल ने अपने वक्तव्य में खरखौदा के गांव के इतिहास की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि यहां के गांव का इतिहास बहुत समृद्ध है। डॉ. यशपाल सिंह ने इतिहास लेखन पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्रमाण आधारित लिखा हुआ इतिहास उपयोगी होता है। उन्होंने कहा कि इतिहास लेखकों का कार्य चुनौतीपूर्ण होता है, इसलिए इतिहास पर शोध करने वाले सभी शोधकर्ताओं को विशेष सावधानी से, तथ्य पर आधारित और वस्तुनिष्ठ शोध कार्य करना चाहिए, जिस को आधार बनाकर भविष्य के इतिहासकार आगामी शोध कर सकें। मुख्य वक्ता के रूप में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जयवीर धनखड़ ने शिरकत की। उन्होंने खरखौदा के इतिहास के बारे में बताते हुए कहा कि क्षेत्र में राष्ट्रीय आंदोलनों में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। 1857 की क्रांति से लेकर आजादी की लड़ाई और आपातकाल तक क्षेत्र के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। क्षेत्र पर आर्य समाज का प्रभाव रहा है। क्षेत्र का योगदान सराहनीय रहा है। एक समय ऐसा था जब फौजी ~~तार~~ से पैसा भेजते तो उसका अच्छा आर्थिक प्रभाव पड़ा। विजेताओं में क्षेत्र के गांव के कर्नल शामिल है। समापन समारोह के मुख्य वक्ता श्री जगदीश प्रसाद, सहायक निदेशक हरियाणा एकेडमी ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर गवर्नमेंट ऑफ हरियाणा, सम्मानित अतिथि ब्रिगेडियर सत्यदेव दहिया चेयरमैन गुरुकुल मटिंडू (सोनीपत) और श्री अश्वनी कुमार, कार्यवाहक प्राचार्य, राजकीय

महाविद्यालय, भैंसवाल कलाँ (सोनीपत) रहे। प्रथम दिवस पर तीन तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. रेखा रानी सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक ने की। इस सत्र में तीस प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए इस सत्र के शोध पत्रों में मुख्य शीर्षक खाप पंचायतें, आर्य समाज, सर छोटूराम का समाज में योगदान और खरखौदा का इतिहास रहे। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री अमित सहायक प्राध्यापक बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक ने की। इस सत्र में 32 प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र में मुख्य रूप से 1857 की क्रांति में खरखौदा का योगदान, खरखौदा का आर्थिक विकास, आईएमटी के खरखौदा के आर्थिक विकास में भूमिका आदि विषयों पर चर्चा हुई। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. विकास पवार सहायक प्राध्यापक, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक ने की। इस सत्र में खरखौदा क्षेत्र के गांव का इतिहास, आर्य समाज, खरखौदा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, खरखौदा का औद्योगिक विकास, 1857 की क्रांति और खाप पंचायत आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई।

राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन भी तीन तकनीकी सत्र आयोजित हुए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुधीर मलिक सहायक प्राध्यापक बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक ने की। इस सत्र में प्रस्तुत शोध पत्रों के मुख्य विषय हिंदी कविता में राष्ट्रीयता की भावना, हिंदी साहित्य, आजाद हिंद फौज, लोक साहित्य में कवि मेहर सिंह का योगदान, खरखौदा की संस्कृति, सामाजिक मूल्य और परंपराओं पर तकनीक का योगदान और रिसालदार इशरत अली का 1857 की क्रांति में योगदान आदि मुख्य विषय रहे। द्वितीय दिवस के अंतिम दो सत्रों की अध्यक्षता डॉ. रेखा रानी, सहायक प्राध्यापक (इतिहास) बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक और श्रीमती गीता शर्मा सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान) शहीद दलबीर सिंह राजकीय महाविद्यालय, खरखौदा (सोनीपत) ने की। इस दौरान नई शिक्षा नीति, हिंदी आंदोलन, हिंदी क्रांति में खरखौदा का योगदान, पर्यटन क्षेत्र में खरखौदा का योगदान, खरखौदा का सैन्य इतिहास, राजनीतिक इतिहास, फौजी मेहर सिंह, तबला वादक श्री झम्मन, 1947 में खरखौदा का इतिहास, खरखौदा के विकास में आर्थिक तत्व का महत्व, बाजे भगत का हरियाणवी साहित्य में योगदान ,जनसंख्या का अध्ययनवर्तमान की आर्थिक स्थिति आदि चर्चा के विषय रहे।

इस सेमिनार में समन्वयक की भूमिका श्रीमती किरन सरोहा ने निभाई। श्री विनोद मलिक ने आयोजन सचिव, सह-समन्वयक श्रीमती नमिता रानी, डॉ. रजनेश कुमारी, श्री प्रदीप कुमार और डॉ. संगीता कुमारी, आयोजन समिति में डॉ. योगेन्द्र सिंह, डॉ. मंदीप कुमारी, डॉ. कीर्ति खत्री,

डॉ. रेखा और डॉ. रवीना पँवार, सलाहकार समिति में श्री दिनेश कुमार, डॉ. योगेश बाजवान और श्री जगबीर सिंह, कोषाध्यक्ष श्रीमती मधुलता और श्रीमती प्रियंका तथा तकनीकी सहयोग सुश्री प्रविश और श्री राजेश कुमार द्वारा दिये गए सहयोग से ही इस सेमिनार का सफल आयोजन संभव हो पाया।